Distance Mode

एम०ए० हिन्दी

पाठ्यक्रम

Centre for Distance Learning & Continuing Education

Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya

Chitrakoot, Satna (M.P.) 485334

पाठ्यक्रम की अवधि 2षैक्षणिक सत्र

पाठ्यक्रम में प्रवेष की अर्हता स्नातक

उत्तीर्णांक प्रतिषत और श्रेणी प्रथम श्रेणी 60 प्रतिषत और उसके ऊपर, द्वितीय श्रेणी 48 प्रतिषत से 60 प्रतिषत से ऊपर कम, तृतीय श्रेणी 36 प्रतिषत से ऊपर 48 प्रतिषत से कम।

प्रथम वर्शः

प्रष्नपत्र क्रमांक	**प्रष्न पत्र का नाम**	**आन्तरिक**	**बाह्य**	**पूर्णांक**	**उत्तीर्णांक**
प्रथम	प्राचीन एवं मध्य कालीन काव्य	30	70	100	36
द्वितीय	आधुनिक काव्य	30	70	100	36
तृतीय	आधुनिक गद्य साहित्य	30	70	100	36
चतुर्थ	भाशा विज्ञान एवं हिन्दी भाशा	30	70	100	36

द्वितीय वर्श :

प्रष्नपत्र क्रमांक	**प्रष्न पत्र का नाम**	**आन्तरिक**	**बाह्य**	**पूर्णांक**	**उत्तीर्णांक**
पंचम्	काव्यषास्त्र एवं साहित्यलोचन	30	70	100	36
शश्ट	हिन्दी साहित्य का इतिहास	30	70	100	36
सप्तम्	प्रयोजनमूलक हिन्दी	30	70	100	36
अश्टम्	भारतीय साहित्य	30	70	100	36
नवम्	विषेश अध्ययन (कोई एक प्रष्न) 1. भक्तिकाल 2. छायावाद	30	70	100	36

नोट– विषेश अध्ययन (वैकल्पिक प्रष्नपत्र) के प्रत्येक प्रष्नपत्र में न्यूनतम 10 छात्र होने चाहिए अन्यथा की स्थिति में विभाग द्वारा निर्देषित वैकल्पिक पत्र ही छात्रों को पढ़ना होगा।

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–1
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रस्तावना :

हिन्दी के आदिकालीन काव्य अपनी पृश्ठभूमि में अपभ्रंष के अवदान को पूरी तरह समेंटे हुए हैं। प्रबंध, कड़वकबद्ध, मुक्तक आदि काव्यरूपों में रचित और अपभ्रंष, अवहट् एवं देषी भाशा में अभिव्यजिंत आदिकालीन साहित्य की परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परम्परा को सुरक्षित रखा है। उत्तर मध्यकालीन (रीतिकाल) काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड़ है। इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की धड़कनों को समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है।

पाठ्य विशय :

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित 6 कवियों का अध्ययन किया जाएगा–

इकाई–1विद्यापति	विद्यापति पदावली, संपादक–रामवृक्ष बेनीपुरी (निर्धारित 25 पद) 1,3,4,5,11,12,18,23,25,29,32,34,49,51,53,54,59,72,110,121,127,178197,220,222
इकाई–2 (क) कबीर	कबीर ग्रंथावली, संपादक–डॉ. ष्याम सुन्दर दास (निर्धारित 100 सखियॉ तथा 25 पद) गुरूदेव कौ अंग–1,7,12–14,19,20,24–30 सुमिरन कौ अंग–1–10 विरह कौ अंग–1–3,11–30 परचा कौ अंग–1–25 रस कौ अंग–1–4 निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग–1–9 मन कौ अंग–1–5 माया कौ अंग–4,5,7,15,20 पद–1,2,3,11,16,43,64,70,71,84,87,92,98,100,111,114,138,180,182,206,207,213,218,225
(ख) जायसी	पद्मावत, संपादक–आचार्य रामचन्द्र षुक्ल– नखषिख वर्णन, नागमती विरह वर्णन।
इकाई–(क) सूरदास	भ्रमरगीत सार, संपादक– आचार्य रामचन्द्र षुक्ल (निर्धारित 50 पद) पद संख्या

	–7,18,23,24,25,34,38,39,42,44,52,62,64,75,76,77,82, 85,89,90,91,92,95,99,100,101,104,105,106,109,121,1 29,130,131,138,140,131,153,157,158,171,172,175,2 01,205,206,210,213,214,221 (ख) तुलसीदास रामचरित मानस (गीता प्रेस)–बालकाण्ड (प्रारंभ के 50 दोहे–चौपाइयॉ)
इकाई–4 बिहारी	बिहारी रत्नाकर संपादक–जगन्नाथदास रत्नाकर (निर्धारित 100 छंद) 1,5,7,13,20,28,32,37,38,41,42,45,46,52,55,57,60,61,6 2,68,69,70,73,85,91,94,101,103,104,121,128,131,141 ,151,161,171,173,178,181,191,192,201,207,217,228, 237,251,255,265,283,295,300,301,304,307,311,317, 321,327,328,331,340,341,345,347,351,357,361,363, 371,381,388,390,391,396,401,406,407,412,419,420, 425,428,429,432,434,438,442,451,461,472,489,496, 583,588,590,658,668,681,690
इकाई–5 द्रुत पाठ	निम्नांकित 10 कवियों में से किन्ही पॉच पर लघूत्तरी प्रष्न पूछे जायेंगे–सरहपाद, गोरखनाथ, अमीर खुसरो, दादू मीराबाई, रैदास, रहीम, केषव, भूशण, पद्माकर।

अंक विभाजन :

3 व्याख्याएं 3ग10 30 अंक

2 आलोचनात्मक प्रष्न 2ग10 20 अंक

5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग2 10

10 वस्तुनिश्ठ/अति लघुत्तरी प्रष्न 10ग1 10 अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ

1.	विद्यापति	डॉ. षिवप्रसाद सिंह
2.	विद्यापति	डॉ. आनन्द प्रकाष दीक्षित
3.	कबीर	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली
4.	कबीर	सं. विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृश्ण प्रकाषन, नई दिल्ली
5.	जायसी ग्रंथावली	आचार्य रामचन्द्र षुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा,काषी
6.	जायसी	रामपूजन तिवारी, राधाकृश्ण प्रकाषन, नई दिल्ली
7.	सूर साहित्य	हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाषन,नई दिल्ली
8.	सूरदास	आचार्य रामचन्द्र षुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा,काषी
9.	तुलसी	सं. उदयभान सिंह, राधाकृश्ण प्रकाषन, नई दिल्ली

10.	तुलसी संदर्भ और समीक्षा	सं. त्रिभुवन सिंह, काषी हिन्दू वि.वि. वाराणसी
11.	गोस्वामी तुलसीदास	आचार्य रामचन्द्र षुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काषी
12.	बिहारी	पं.विष्वनाथ मिश्र, वाणी विज्ञान, वाराणसी
13.	बिहारी का नया मूल्यांकन	बच्चन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–2
आधुनिक हिन्दी काव्य

प्रस्तावना :

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिषीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विष्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृश्टिकोण इसकी प्रमुख विषेशताएं हैं। उपेक्षित विशय भी यहॉ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सारणियॉ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुश्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवष्यक एवं प्रासंगिक है।

पाठ्य विशय :

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निर्धारित –

इकाई–1	मैथिलीषरण गुप्त	साकेत (नवम् संग)
इकाई–2	(क)जयषंकर प्रसाद	कामायनी (चिन्ता, श्रद्धा, लज्जा सर्ग)
	(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी	राम की षक्ति पूजा, तुलसीदास (प्रारंभ के 10 छन्द)
इकाई–3	(क) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	नदी के द्वीप, असाध्यवीणा, बावरा अहेरी तथा अन्य पॉच कविताएं
	(ख) गजानन माधव मुक्तिबोध	भूल गलती, मेरे लोग, ब्रह्मराक्षस
इकाई–4	नागार्जुन	पतिबद्ध हूॅ, कल्पना के पुत्र हे भगवान्, सिन्दूर तिलकितभाल, उनको प्रणाम, बादल को घिरते देखा है, बहुत दिनों के बाद, अकाल और उसके बाद, षासन की बंदूक, सत्य, अग्निबीज।

इकाई–5	द्रुत पाठ	निम्नांकित 10 कवियों में से किन्हीं पॉच पर लघूत्तरी प्रष्न पूछे जायेंगे– श्रीधर पाठक, जगन्नाथ दास, रत्नाकर, महादेवी, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन षास्त्री, षमषेर बहादुर सिंह, नरेष मेहता, दुश्यंत कुमार, धूमिल, जगदीष गुप्त।

अंक विभाजन :

3 व्याख्याएं 3ग10 30 अंक

2 आलोचनात्मक प्रष्न 2ग10 20 अंक

5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग2 10

10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10 अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ, डॉ. नागेन्द्र नेषनल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली।
2. कामायनी एक पुनर्विचार– गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली।
3. कामायनी का नया अन्वेशण–डॉ. रामगोपाल षर्मा, दिनेष, चिन्मय प्रकाषन, जयपुर।
4. कामायनी के काव्य, संस्कृति और दर्षन, द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. निराला की साहित्य साधना भाग 2–रामविलास षर्मा, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली।
6. अज्ञेय की कविता– एक मूल्यांकन'चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, सरस्वती प्रेस, दिल्ली।
7. अज्ञेय–डॉ. विष्वनाथ प्रसाद तिवारी, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, दिल्ली।
8. गजानन माधव मुक्तिबोध का रचना संसार–सं. गंगा प्रसाद विमल, सुशमा पुस्तकालय, दिल्ली।
9. मुक्तिबोध का काव्य चेतना और मूल्य संकल्प–डॉ. हुकुमचन्द्र, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–3

आधुनिक गद्य साहित्य

प्रस्तावना :

आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव–मन और मस्तिश्क की अभिव्यक्ति का सषक्त एवं अनिवार्य माध्यम बन गया है। मनुश्य का राग–विराग, तर्क–वितर्क तथा चिंतन–मनन जिस रागात्मकता के साथ कौषलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यक्त होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में नहीं। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़ मन–मस्तिश्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है। निबंध गद्य का प्रौढ़–षक्तिषाली प्रतिरूप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्रय चेतना का विष्वसनीय प्रतिनिधि है। नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विधि विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है। आज मनुश्य को उसकी प्रकृति, परिवेष, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास–प्रक्रिया के साथ सहज प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है। इस प्रष्नपत्र में 2 नाटक उनन्यास,7 निबंध, 7 कहानियॉ एवं 1 चरितात्मक कृति पठनीय है। इनका चयन संबंधित विष्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा।

पाठ्य विशय :

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निर्धारित–

इकाई–1	(क)	स्कन्दगुप्त अथवा चन्द्रगुप्त (जयषंकर प्रसाद)
	(ख)	आशाढ़ का एक दिन अथवा आधे–अधूरे (मोहन राकेष)

इकाई–2	(क)	गोदान (प्रेमचन्द्र) अथवा षेखर : एक जीवनी (भाग–1 एवं भाग–2 अज्ञेय)
	(ख)	बाणभट्ट की आत्मकथा (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी) अथवा मैला ऑचल (फणीष्वरनाथ रेणु)
इकाई–3	(क)	बालकृश्ण भट्ट : चन्द्रोदय
	(ख)	आचार्य रामचन्द्र षुक्ल : कविता क्या है
	(ग)	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : बसन्त आ गया है?
	(घ)	रामवृक्ष बेनीपुरी : नींव की ईंट
	(ड.)	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी : भारतीय साहित्य की एकता
	(च)	विद्यानिवास मिश्र : मेरे राम का मुकुट भींग रहा है
	(छ)	हरिषंकर परसाईं : भोलाराम का जीव
इकाई–4	कहानी संकलन : निम्नलिखित 7 कहानीकारों की श्रेश्ठ कहानियों का अध्ययन	
	(क)	चन्द्रधर षर्मा 'गुलेरी'– उसने कहा था
	(ख)	जयषंकर प्रसाद – पुरस्कार
	(ग)	प्रेमचन्द्र – कफन
	(घ)	जैनेन्द्र – जाह्नवी
	(ड.)	निर्मल वर्मा – जलती झाड़ी
	(च)	ऊशा प्रियंवदा –वापसी
	(छ)	राजेन्द्र यादव – मेहमान
इकाई–5	(क)	पथ के साथी (महादेवी वर्मा) अथवा आवारा मसीहा (विश्णु प्रभाकर)
	(ख)	द्रुत पाठ हेतु निम्नलिखित चयनित रचानाकारों और विधाओं से संबंधित एक–एक लघूउत्तरी प्रष्न पूछे जायेंगे– • नाटककार : भारतेन्दु हरिष्चन्द्र, लक्ष्मीनारायण मिश्र,

		डॉ. रामकुमार वर्मा, उपेन्द्रनाथ अष्क, धर्मवीर भारती। • उपन्यासकार : जैनेन्द्र, राहुल सांकृत्यायन, यषपाल, अमृतलाल नागर, भीश्म साहनी। • निबंधकार : भारतेन्दु हरिष्चन्द्र, बालमुकुन्द गुप्त, ष्यामसुन्दर दास, सरदार पूर्ण सिंह, डॉ. नागेन्द्र। • कहानीकार : बंग महिला, अज्ञेय, मुक्तिबोध, षिवप्रसाद सिंह, अमरकांत • स्फुट ग्रंथ : 1. अमृत राय–कलम का सिपाही 2. षिवप्रसाद सिंह उत्तरयोगी 3. हरिवंषराय बच्चन–क्या भूलूँ क्या याद करूँ 4. राहुल–सांकृत्यायन–घुमक्कड़ षास्त्र 5. माखनलाल चतुर्वेदी–साहित्य देवता

अंक विभाजन :

3 व्याख्याएं 3ग10 30 अंक
2 आलोचनात्मक प्रष्न 2ग10 20 अंक
5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग2 10
10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10 अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रसाद के नाटकों का षास्त्रीय अध्ययन–डॉ. जगन्नाथ दास रत्नाकर, सरस्वती मंदिर, वाराणसी।
2. प्रसाद, नाट्य और रगं षिल्प–गोविन्द चातक, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
3. समकालीन नाट्य साहित्य और मोहन राकेष के नाटक–सुशमा अग्रवाल, अनुपम प्रकाषन जयपुर।
4. हिन्दी नाट्य का उद्भव और विकास–डॉ. दषरथ ओझा, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।
5. हिन्दी नाट्कों का विकासात्मक अध्ययन–डॉ.सोमनाथ गुप्त।

6. हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन–डॉ.षान्तिगोपाल पुरोहित।
7. मोहन राकेष : नाट्य सृजन और द्वंद्व–उशा भार्गव, डी युनिवर्सल बुक डिपो,जयपुर।
8. प्रेमचन्द व्यक्तित्व और कृतित्व–षचीरानी गुर्टू, इण्डिया पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली।
9. गोदान के अध्ययन की समस्यायें–गोपाल राय, ग्रंथ निकेतन, पटना।
10. हजारी प्रसाद द्विवेदी के काल में सांस्कृतिक चेतना–रविकुमार अनु. पंचषील प्रकाषन. जयपुर।
11. प्रेमचन्द : एक विवेचन–सुरेष सिन्हा, रीगल बुक डिपो, दिल्ली।
12. आचार्य रामचन्द्र षुक्ल–रामचन्द्र तिवारी, विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी।
13. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी–सं. गणपतिचन्द्र गुप्त, भारतेन्दु भवन, चण्डीगढ़।
14. नई कहानी–संदर्भ और प्रकृति–देवीषंकर अवस्थी, अक्षर प्रकाषन, दिल्ली।
15. नई कहानी की भूमिका–कमलेष्वर, अक्षर प्रकाषन, दिल्ली।

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–4

भाशा विज्ञान एवं हिन्दी भाशा

प्रस्तावना :

साहित्य आद्यांत एक भाशिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाशिक व्यवस्था का सुस्पश्ट सर्वांगींण ज्ञान अपरिहार्य है। भाशा विज्ञान की वस्तुनिश्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाशिक इकाइयों तथा भाशा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतःसंबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाशिक अंतःदृश्टि देता है। अपितु भाशा–विशयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाशा भी प्रदान करता है। मूल भाशा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाशिक प्रकृति की स्वीकृति प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाष्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवष्यकता नहीं कि भाशा के साहित्येत्तर प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाशा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है। भाशा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाशा का ऐतिहासिक विकासक्रम भौगोलिक विस्तार, भाशिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विशयक जानकारी एवं देवनागरी के वैषिश्ट्य विकास और मानकीकारण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

पाठ्यविशय :

(क) भाशा विज्ञान

इकाई–1

भाशा और भाशा विज्ञान : भाशा की परिभाशा और अभिलक्षण, भाशा व्यवस्था और भाशा व्यवहार, भाशा संरचना और भाशिक प्रकार्य। भाशा विज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिषाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

स्वनप्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरूप और षाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारण, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विष्लेशण।

इकाई–2

व्याकरण : रूप प्रक्रिया का स्वरूप षाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद : मुक्त–आबद्ध, अर्थदर्षी और संबंधदर्षी, संबंधदर्षी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य विष्लेशण, निकटस्थ–अवयव विष्लेशण, गहन संरचना और वाह्य संरचना।

अर्थविज्ञान : अर्थ का अवधारणा, षब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ परिवर्तन।

साहित्य और भाशा विज्ञान : साहित्य के अध्ययन में भाशा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

(ख) हिन्दी भाशा

इकाई–3

हिन्दी की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाशएँ : वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विषेशताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाशाएँ–पालि प्राकृत–षौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंष और उनकी विषेशताएँ। आधुनिक भारतीय आर्य भाशाएँ और उनका वर्गीकरण।

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाशाएँ, पष्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियॉ। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विषेशताएँ।

इकाई–4

हिन्दी का भाशिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था–खंड्य खंड्येतर। हिन्दी षब्द रचना–उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना–लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विषेशण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य रचना : पदक्रम और अन्विति।

हिन्दी के विविध रूप : संपर्क भाशा, राश्ट्रभाशा, राजभाशा के रूप में हिन्दी, माध्यम–भाशा, संचार भाशा, हिन्दी की संविधानिक स्थिति।

इकाई–5

हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ : ऑकड़ा संसाधन और षब्द संसाधन, वर्तनी–षोधक, मषीन अनुवाद, हिन्दी भाशा–षिक्षण।

देवनागरी लिपि : विषेशताएँ और मानकीकरण।

अंक विभाजन :

भाशा विज्ञान (2 आलोचनात्मक प्रष्न) 2ग15 30 अंक

हिन्दी भाशा (2 आलोचनात्म प्रष्न) 2ग10 20 अंक
5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग2 10
10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10 अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1. भाशा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
2. भाशा विज्ञान की भूमिका–देवेन्द्रनाथ षर्मा, राधाकृश्ण प्रकाषन, दिल्ली।
3. भाशा विज्ञान एवं भाशाषास्त्र–डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी।
4. भाशा और भाशिकी–देवीषंकर द्विवेदी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
5. हिन्दी भाशा का इतिहास–डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी।
6. हिन्दी भाशा–डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
7. भारतीय आर्य भाशा और हिन्दी–सुनीत कुमार चटर्जी।
8. हिन्दी भाशा उद्गम और विकास उदयनारायण तिवारी।
9. हिन्दी की बोलियॉ एवं उपभाशायें–डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल, इलाहाबाद।
10. हिन्दी का उद्भव एवं विकास–डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल, इलाहाबाद।
11. आधुनिक भाशा विज्ञान–डॉ.राजमणि षर्मा, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली।
12. हिन्दी भाशा की संरचना–डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली।

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–5

काव्यषास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रस्तावना :

रचना के वैषिश्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्य षास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। यह दृश्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक सांस्कृतिक परिवेष के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जॉचने परखने के लिए भारतीय और पाष्चात्य काव्यषास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्यविशय :

(क) भारतीय काव्यषास्त्र

इकाई–1

काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

रस सिद्धांत : रस का स्वरूप, रस–निश्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

अलंकार–सिद्धांतःमूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण

रीति सिद्धांतःरीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं षैली, रीति–सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई–2

वक्रोक्ति–सिद्धांतःवक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

ध्वनि–सिद्धांतःध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्र काव्य।

औचित्य–सिद्धांतःप्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

(ख) पाष्चात्य काव्यषास्त्र

इकाई–3

प्लेटो : काव्य सिद्धांत

अरस्तुः अनुकरण–सिद्धांत त्रासदी–विवेचन

लोजाइनस : उदात्त की अवधारणा

ड्राइडन के काव्य–सिद्धांत

वर्डसवर्थ : काव्य भाशा का सिद्धांत

कालरिज : कल्पना–सिद्धांत और ललित–कल्पना

इकाई–4

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य

टी. एस. इलिएट : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकला का सिद्धांत, वस्तुनिश्ठ समीकरण, संवेदन षीलता का असहचर्य।

आई. ए. रिचर्ड्स : रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

सिद्धांत और वाद : आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविष्लेशण तथा अस्तित्ववाद।

आधुनिक समीक्षा की विषिश्ट प्रवृत्तियॉ : संरचनावाद, षैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावादइ।

(ग) हिन्दी कवि आचार्यों का काव्यषास्त्रीय चिंतन

इकाई–5

लक्षण–काव्य–परंपरा एवं कवि–षिक्षा

(घ) हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियॉ

षास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविष्लेशणवादी, सौंदर्यषास्त्रीय, षैलीवैज्ञानिक और समाजषास्त्रीय।

अंक विभाजन :

संस्कृत काव्यषास्त्र 2ग10 20 अंक

पाष्चात्य काव्यषास्त्र 2ग10 20 अंक

5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग2 10

10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10 अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1. काव्यदर्पण–रामदहिन मिश्र
2. भारतीय काव्यषास्त्र–डॉ. नागेन्द्र
3. समीक्षात्मक–डॉ. भगीरथ मिश्र
4. पाष्चात्य काव्यषास्त्र–देवेन्द्र षर्मा, नेषनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
5. पाष्चात्य काव्यषास्त्र–षषिभूशण सिंघल
6. काव्यषास्त्र–सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली
7. काव्यरूप–गुलाबराय, सूर्यप्रकाष प्रकाषन, दिल्ली
8. षास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत–डॉ नगेन्द्र, नेषनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
9. रस विमर्ष–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
10. भारतीय काव्यषास्त्र के नये क्षितिज– डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
11. रस सिद्धांत– डॉ नगेन्द्र, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली
12. रस मीमांसा–आचार्य रामचन्द्र षुक्ल,विद्यामंदिर, काषी
13. अरस्तु के काव्य सिद्धांत– डॉ नगेन्द्र, नेषनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
14. भारतीय एवं पाष्चात्य काव्यषास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. बच्चन सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–6
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रस्तावना :

किसी भी देष के जनमानस की मनोवृत्ति, दषा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहॉ के साहित्य में परिलक्षित होता है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। इस बदली हुई विकास प्रकिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा परखा जा सकता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से कमोवेष पूरा भारत प्रभावित होता रहा है। जिसकी गॅूज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं नवी षताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृष्य के साथ साहित्यिक सृजनषीलता के विभिन्न रूपों प्रवृत्तियों और भाशा–षैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्यविशय :

इकाई–1

- इतिहास–दर्षन और साहित्येतिहास
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुर्नलेखन की समस्यायें।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल–विभाजन, सीमा–निर्धारण और नामकरण।
- हिन्दी साहित्य : आदिकाल की पृश्ठभूमि, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य, जैन–साहित्य।
- हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृष्य, साहित्यिक प्रवृत्तियॉ, काव्यधाराऍं, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचानाऍं।

इकाई–2

- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि, सांस्कृतिक–चेतना एवं भक्ति–आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराऍं तथा उनका वैषिश्ट्य।
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
- राम और कृश्ण काव्य, रामकृश्ण काव्येतर काव्य, भक्ति काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैषिश्ट्य। भक्तिकालीन गद्य साहित्य।

इकाई–3

- उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण–ग्रंथों की परंपरा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त), प्रवृत्तियां और विषेशताऍं, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाऍं। रीतिकालीन गद्य साहित्य।

इकाई–4

- आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृश्ठभूमि, सन् 1857 की राजक्रांति और पुनर्जागरण।
- भारतेन्दु युगः प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विषेशताएं।
- द्विवेदी युगः प्रमुख साहित्यकार, रचानाएं और साहित्यिक विषेशताएं।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास–छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विषेशताएं।
- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियॉ–प्रगतिवादी, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचानाएं और साहित्यिक विषेशताएं।

इकाई–5

- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।
- दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- हिन्दीतर क्षेत्रों तथा देषांतर में हिन्दी भाशा और साहित्य।

अंक विभाजन :

3 आलोचनात्मक प्रष्न 3ग15 45 अंक
5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग3 15 अंक
10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र षुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काषी।

2- हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अंतरचन्द्र कपूरचन्द्र एण्ड कं. दिल्ली।

3- हिन्दी साहित्य का आदिकाल–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राश्ट्रभाशा परिशद, पटना।

4- हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली।

5- साहित्य और इतिहास–मैनेजर पाण्डेय, पीपुल्स पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली।

6- हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियां–षिवकुमार षर्मा, अषोक प्रकाषन, दिल्ली।

7- हिन्दी साहित्य का मानक इतिहास–लक्ष्मीसागर वार्श्णेय, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद।

8- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (दो भाग)–रामकुमार वर्मा।

9- मध्यकालीन बोध का स्वरूप–डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रकाषन ब्यूरो, पंजाब विष्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

10- आधुनिक काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियॉ– डॉ. नगेन्द्र, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली।

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–7
प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रस्तावना :

भाशा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं–सौंदर्यपरक और प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवष्यकताओं और जीवन व्यवहार से है और बाकीपरक होकर भी जो समाज–सापेक्ष सेवा माध्यम (सर्विस टूल्स) के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवष्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली प्रयोजनमूलक हिन्दी का अध्ययन अति अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राश्ट्रभाशा तथा राजभाशा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

पाठ्यविशय :

खण्ड क : कामकाजी हिन्दी

इकाई–1

- हिन्दी के विभिन्न रूप–सृजनात्मक भाशा, संचार भाशा, राज भाशा, माध्यम भाशा, मातृभाशा।
- कार्यालयीन हिन्दी (राजभाशा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण।
- पारिभाशिक षब्दावली–स्वरूप एवं महत्व, पारिभाशिक षब्दावली–निर्माण के सिद्धांत।
- ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाशिक षब्दावली (निर्धारित कम्प्यूटिंग)।

खण्ड ख : हिन्दी कम्प्यूटिंग

इकाई–2

- कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब पब्लिषिंग का परिचय।
- इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।
- वेब पब्लिषिंग

- इंटर एक्प्लोइट अथवा नेटस्केप
- लिंक, ब्राउजिंग, ई–मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग हिन्दी साफ्टवेयर पैकेज।

खण्ड ग : पत्रकारिता

इकाई–3

- पत्रकारिता : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार।
- हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।
- समाचार लेखन कला।
- संपादन के आधारभूत तत्व।
- व्यावहारिक प्रूफ षोधन।
- षीर्शक की संरचना, लीड, इंट्री एवं षीर्शक संपादन।
- संपादकीय लेखन।
- साक्षोत्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन।
- प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता।

खण्ड घ : मीडिया लेखन

इकाई–4

- जनसंचार : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियॉ।
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप–मुद्रण, श्रव्य, दृष्य, इंटरनेट।
- श्रव्य माध्यम (रेडियो)।
- मौखिक भाशा की प्रकृति। समाचार–लेखन एवं वाचन। रेडियो नाटक। उद्घोशणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर तथा रिपोर्ताज। दृष्य–श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन एवं मीडिया)।

- दृष्य माध्यमों में भाशा की प्रकृति। दृष्य एवं श्रव्य सामाग्री का टेली–ड्रामा/डॉक्यू ड्रामा, संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृष्य माध्यमों में रूपान्तरण। विज्ञापन की भाशा।
- इंटरनेट : सामग्री सृजन।

खण्ड ड. : अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार

इकाई–5

- अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र प्रक्रिया एवं प्रविधि।
- हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।
- कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद।
- जनसंचार माध्यमों का अनुवाद।
- वैचारिक–साहित्य का अनुवाद।
- वाणिज्यिक–अनुवाद।
- विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद।
- व्यावहारिक–अनुवाद–अभ्यास।
- कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रषासनिक षब्दावली, प्रषासनिक प्रयुक्तियॉ, पदनाम, विभाग आदि।
- पद्यो के अनुवाद।
- पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद।
- बैंक–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास।
- साहित्य–अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक।
- सारानुवाद।
- दुभाशिया प्रविधि।
- अनुवाद परीक्षण एवं मूल्यांकन।

अंक विभाजन :

4 आलोचनात्मक प्रष्न 4ग12 48 अंक (प्रत्येक खण्ड से एक–एक)
4 लघूत्तरी प्रष्न 4ग3 12 अंक
10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी–डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी–डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली।
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी–सिद्धांत एवं प्रयोग : डॉ. दंगल झालटे, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली।
4. प्रयोजनमूलक समकालीन हिन्दी : डॉ. कैलाषचन्द्र भाटिया, तक्षषिला प्रकाषन, नई दिल्ली।
5. राजभाशा सहायिका : अवधेष मोहन गुप्त, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली।
6. प्रषासनिक कामकाजी षब्दावली–डॉ. हरिमोहन, तक्षषिला प्रकाषन, नई दिल्ली।
7. प्रषासन और राजभाश हिन्दी– डॉ. हरिमोहन, तक्षषिला प्रकाषन, नई दिल्ली।
8. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएं : डॉ. भोलानाथ तिवारी, विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी।
9. अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी, षब्दकार प्रकाषन, हिन्दी।
10. अनुवाद विज्ञान और संप्रेशण– डॉ. हरिमोहन, तक्षषिला प्रकाषन, नई दिल्ली।
11. अनुवाद : अवधारणा और अनुप्रयोग–सं. चन्द्रभान रावत एवं डॉ. दिलीप सिंह, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद।

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–8
भारतीय साहित्य

प्रस्तावना :

भारतीय भाशाओं में हिन्दी भाशा और साहित्य का स्थान अन्य प्रान्तीय भाशाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण हैं, इसलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रषस्त बनाना अत्यन्त आवष्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृश्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाशाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान–क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृश्टि का विकास होगा। यही नहीं, इससे हिन्दी–अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा। इस प्रष्नपत्र के चार खण्ड से एक–एक प्रष्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

पाठ्यविशय :

प्रथम खण्ड

इकाई–1

(क) भारतीय साहित्य का स्वरूप।

(ख) भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं।

(ग) भारतीय साहित्य मे आज के भारत का बिंब।

(घ) भारतीय साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

द्वितीय खण्ड

इकाई–2

इसके अन्तर्गत हिन्दीतर साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है, जो तीन वर्गो में विभाजित है–

1. दक्षिणात्य भाशा वर्ग – मलयालम, तमिल, तेलगु, कन्नड़।
2. पूर्वांचल भाशा वर्ग – उड़िया, बंगला, असमिया, मणिपुरी।
3. पष्चिमोत्तर भाशा वर्ग – मराठी, गुजराती, पंजाबी, कष्मीरी, उर्दू।

निर्देष :

1. प्रत्येक विद्यार्थी इन 13 विकल्पों में से एक भाशा का चयन करेगा, बषर्ते वह भाशा उसकी अपनी क्षेत्रीय भाशा से भिन्न भाशा बाल बाले से संबंधित हो।

2. विद्यार्थी एक भाशा वाले (दक्षिणात्य/पूर्वांचल/पष्चिमोत्तर) में से किसी एक के साहित्य के इतिहार का अध्ययन करेगा।

तृतीय खण्ड

इस खण्ड के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। इसमें द्वितीय खण्ड में निर्धारित किसी एक हिन्दीतर भाशा–साहित्य के साथ हिन्दी को जोड़कर अध्ययन करना होगा।

चतुर्थ खण्ड

इकाई–3

इसके अन्तर्गत 3 उपन्यास, 3 कविता संग्रह और 3 नाटक प्रस्तावित हैं। इनमें से किसी 1 उपन्यास, 1 काव्य संग्रह और 1 नाटक का चयन संबंधित विष्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा, बषर्ते यह कृति विष्वविद्यालय से संबंधित क्षेत्रीय भाशा की न हो। इन पुस्तकों से मात्र आलोचनात्मक प्रष्न पूछे जाएगें।

उपन्यास :

1. एक इमली की कहानी (तमिल–सुन्दर रामास्वामी)
2. अग्निगर्भ (बंगला–महाष्वेता देवी)
3. मृत्युंजय (असमिया–वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य)

कविता संग्रह :

इकाई–4

1. कोच्चिन के दरख्त (मलयालम–के. जी. षंकरपिल्लै)
2. वर्शा की सुबह (उड़िया–सीताकान्त महापात्र)
3. बीच का रास्ता नहीं होता (पंजाबी–पाष)

इकाई–5

1. घासीराम कोतवाल (मराठी–विजय तेन्दुलकर)
2. हयवदन (कन्नड़–गिरीष कर्नाड)
3. जसमा ओड़न (गुजराती–षांता गॉधी)

अंक विभाजन :

4 आलोचनात्मक प्रष्न 4ग10 40 अंक

4 लघूत्तरी प्रष्न 4ग5 20 अंक

10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10अंक

एम. ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र–9

(विषेश अध्ययन)

छायावाद

प्रस्तावना :

हिन्दी की विषाल साहित्यिक–परम्परा में भक्तिकाल के लोकजागरण के पष्चात् नवोन्मेश का विकास छायावाद में ही दिखाई पड़ा। छायावाद परम्परा की समस्त विकास–प्रक्रिया को समेटते हुए नयी–नयी भावभूमि और नये–नये रूप–विन्यास देने में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। उसने अपनी साहित्यिक यात्रा पग–पग न चलकर छलॉग के द्वारा तय की स्थूलता–इतिवृत्तात्मकता की जगह सूक्ष्मता, तथ्यता की जगह विराट कल्पना, सामाजिक–बोध की जगह व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति–साहचर्य, मानव–प्रेम, वैयक्तिक–प्रेम, उच्च नैतिक आदर्ष, देष–भक्ति, राश्ट्रीय–स्वाधीनता एवं सांस्कृतिक–जागरण का नया स्वर छायावाद में मुखरित हुआ। छायावाद नूतन और मौलिक षक्ति का काव्य है। इसमें 'स्व' की आभ्यंतरिक षक्ति अभिव्यंजित हुई है जिसमें आत्मीयता, जीवन की लालसा, उच्चतर जीवन की आकांक्षा, त्याग, प्रेम आदि का संदेष निहित है। छायावाद हमें रस से प्लुत करते हुए उद्‌बुद्ध, सक्रिय और परिश्कृत बनाता है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी की सर्जना प्रकाष स्तम्भ जैसी हैं। छायावाद की छाया ग्रहण किये बिना षताब्दी की घड़कनों को समझने में हम असमर्थ होंगे। अतः इसका अध्ययन–मनन अति प्रासंगिक एवं अनिवार्य है।

पाठ्यविशय :

निम्नांकित कवियों से संबंधित व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रष्न पूछे जायेंगे–

इकाई–1

प्रसाद : लहर (अंतिम 3 लंबी कविताएं)

इकाई–2

निराला : अपरा (10कविताएं)–बादलराग, जुही की कली, जागो फिर एक बार–1, 2, संध्या सुन्दरी, नेह निर्झर बह गया, सरोज स्मषति, भगवान बुद्ध के प्रति, गीत–2, बॉधों न नाव, सखी रे यह डाल बसंत।

इकाई–3

(क) महादेवी : यामा (10 गीत) इस एक बूंद आसू में, अलि कैसे उनका पाऊॅ, जिसको अनुराग सा, धीरे–धीरे उस क्षितिज से, बिरह का जलजात जीवन, बीन भी हूॅ तुम्हारी रागिनी भी, मधुर–मधुर मेरे दीपक जल, षून्य मंदिर में बनूॅगी.....मैं नीर भरी दुःख की बदली, चिर सजग ऑखे उनींदी।

इकाई–4

(क) सुमित्रानन्दन पंत : रष्मिबंध (10 गीत)

(ख) माखनलाल चतुर्वेदी : आधुनिक कवि (10 गीत) 1, 4, 8, 20, 24, 35, 37, 68, 70

इकाई–5

दूत पाठ–निम्नांकित 05 कवियों पर लघूत्तरी प्रष्न पूछे जायेंगे–

मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ षास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, रामकुमार वर्मा।

अंक विभाजन :

3 व्याख्याएं 3ग10 30 अंक
2 आलोचनात्मक प्रष्न 2ग15 30 अंक
5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग6 30 अंक
10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10अंक

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रसाद–निराला–अज्ञेय–डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद

2. निराला की साहित्य साधना भाग–3–रामविलास षर्मा, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली
3. महीयसी महादेवी–गंगा प्रसाद पाण्डेय, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद
4. छायावादी कवियों का सांस्कृतिक दृश्टिकोण–डॉ. प्रमोद सिन्हा, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद
5. जयषंकर प्रसाद–आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद
6. महादेवी–इन्द्रनाथ मदान, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद

एम. ए. (हिन्दी) : वैकल्पिक प्रष्नपत्र

भक्तिकाल

प्रस्तावना :

अपने विषिश्ट अवदानों के कारण हिन्दी–साहित्य का भक्तिकाल 'स्वर्णयुग' के नाम से अभिहित किया जाता है। अपनी पूर्ववर्ती समस्त साहित्यिक परंपरा को पचाकर उसे निखार देने के साथ ही इस काल ने अपना नपया स्वर, नई पहचान दी और नयी–नयी उद्भावनाएं मुखरित की। यह लोग–जागरण का काल है। इसमें कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा जैसी काजयी महान क्रांतकारी और लोकधर्मी सर्जकों का स्वर एक साथ गॅूजा। सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना–संपन्न इस सजग–समर्थ कवियों ने रचनाधर्मिता को गगनचुम्बी ऊॅचाई दी। यहॉ जाति, वर्ग, संप्रदाय, ऊॅच–नींच के भेदभाव मिटते नजर आते हैं और उनकी जगह समन्वय, षांति, सौहार्द, प्रेम, त्याग एवं करूणा की प्रतिश्ठापना होती है। मानव–मूल्य के नये स्वर गुंजित होते हैं। साहित्य की उदारता, पावनता, गंभीरता, भावप्रवणता और कलात्मकता में यह काल अपना सानी नहीं रखता। यह जन और सृजन का साहित्य है। इस काल को जानना पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा को जानना–जुड़ना है। अतः भक्तिकाल का अध्ययन व केवल आवष्यक अपितु प्रासंगिक एवं अनिवार्य है।

पाठ्यविशय :

भक्तिकाल की समय सीमा, काल विभाजन, नामकरण, निर्गुण, सगुण काव्यधाराएं, ज्ञानमार्गी, प्रेममार्गी (सूफी), कृश्णभक्ति एवं रामभक्ति षाखाएं, भक्तों की परंपरा, मध्यकालीन काव्यधाराओं की सामान्य प्रवृत्तियॉ।

भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का व्यक्तित्व एवं साहित्यिक, सामाजिक'सांस्कृतिक अवदान। साहित्यिक धाराओं का वैषिश्ट्य। योगमार्ग और संत–भक्त कवि, भक्तीतर साहित्य की प्रवृत्तियॉ। विषिश्ट साहित्यकार तथा उनकी उपलब्धियॉ। भक्तिकालीन गद्य।

व्याख्या एवं आलोचना हेतु निम्नलिखित में से किन्हीं छः कवियों का निर्धारित संबंधित विष्वविद्यालय करेगा।

इकाई–1

(क) कबीर : संत काव्य (संग्रह) : संपा, परषुराम चतुर्वेदी, संत कबीर साहब प्रारंभ के 45 पद एवं 05 साखी।

(ख) रैदास : संत काव्य (संग्रह) : संपा, परषुराम चतुर्वेदी (कोई 14 पद)।

इकाई–2

मुल्ला दाउद : चन्दायन (प्रारंभ के 25 छंद)

इकाई–3

(क) सूरदास : संक्षिप्त सूरसागर (कोई 50 पद)–1, 2, 3, 15, 16, 23, 28, 33, 36, 42, 49, 50, 51, 56, 58, 59, 60, 61, 62, 64, 65, 74, 79, 81

(ख) तुलसीदास : विनय पत्रिका, गीता प्रेस, गोरखपुर (कोई 50 छंद)– 78, 79, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 95, 96, 99, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 117, 123, 154, 157, 160, 162

इकाई–4

मीराबाई : मीराबाई की पदावली, संपा, परषुराम चतुर्वेदी (कोई 25 पद)–1, 17, 18, 19, 20, 23, 36, 37, 38, 41, 44, 45, 49, 52, 53, 68, 69, 70, 102, 109, 111, 122, 123, 124, 126

इकाई–5

द्रुत पाठ हेतु निम्नलिखित कवियों में से किन्ही दस कवियों का अध्ययन अपेक्षित है–

स्वामी रामानन्द, गुरू नानक देव, दादू, रज्जव, सुंदरदास, सहजोबाई, कुतुबन, मंझन, कुंभनदास, परमानंद दास, हित हरिवंष, कृश्णदास, रहीम।

अंक विभाजन :

3 व्याख्याएं 3ग10 30 अंक

2 आलोचनात्मक प्रष्न 2ग10 20 अंक

5 लघूत्तरी प्रष्न 5ग2 10 अंक

10 वस्तुनिश्ठ/अति लघूत्तरी प्रष्न 10ग1 10अंक